भारतीय वाङ्मय

विगत १० वर्षों से विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिए भारतीय वाङ् मय साहित्यिक सांस्कृतिक समाचारों की एक लघु मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही है। अप्रैल माह के संपादकीय में नव संवत्सर और वासंती नवरात्रों को आध्यात्मिक साधना व सकारात्मक आचरण का प्रतीक बताते हुए संपादक परागकुमार मोदी ने जनता से यथास्थिति से बाहर निकलकर राष्ट्रीय सांस्कृतिक नीति से संचालित समग्र वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ शक्ति की मौलिक कल्पना का आह्वान किया है।

किताब पढ़ने की संस्कृति पर बल देने के साथ-साथ किताबों में कैरियर व सूचना प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा हिन्दी आदि लेखों के साथ देशभर के साहित्य जगत की गतिविधियों व सम्मान अर्पण इत्यादि के समाचार अप्रैल अंक में निहित हैं। आज जब पुस्तकों के अस्तित्व पर चर्चा छिड़ी है तो पुस्तक का महत्त्व प्रतिपादित करती यह कविता मन को असीम तोष प्रदान करती है-

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 अप्रैल 2009 अंक : 4

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

पुस्तकें

डोलती हैं लोल नहरें
खोलती हैं कान बहरे
बोलती हैं भेद गहरे
ज्ञान का सागर उठाती हैं।

रूढ़ियों में मौन बन्दी
और जिनकी दृष्टि अन्धी
चाह लें तो ज्ञानगन्धी
कुछ नया करके दिखाती हैं।

क्रान्ति का उद्घोष क्या है,
मनुजता का कोष क्या है,
गुण कहो या दोष क्या है
बुद्धि का वैभव बढ़ाती हैं।

-अमलदार 'नीहार', बलिया